ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–१६
दिनांक- मंगलवार, ०८ मार्च, २०२२

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 30.2 एवं 13.7 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 94 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 48 प्रतिशत, हवा की औसत गति 2.2 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 3.9 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 8.6 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 16.7 एवं दोपहर में 33.6 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(09–13 मार्च, 2022)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 09–13 मार्च, 2022 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- उत्तर बिहार के जिलो में अगले दो दिनों तक आसमान साफ तथा उसके बाद आसमान में हल्के बादल आ सकते है हालांकि मौसम के शुष्क रहने की संभावना है।
- इस अवधि में तापमान में २–३ डिग्री सेल्सियस की बढ़ोत्तरी हो सकती है। जिसके चलते अधिकतम तापमान ३२ से ३३ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान में भी १ –२ डिग्री सेल्सियस वृद्धि के साथ तापमान १५ से १८ डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 9 से 12 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से अगले दो दिन तक पछिया हवा उसके बाद एक दिन पूरवा हवा तथा आखिरी के दो दिन पछिया हवा चलने की सम्भावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 60 से 70 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- रवी मक्का की फसल में धनबाल व मोचा निकलने से दाना बनने एवं दुध भरने की अवस्था तक खेत में प्रयाप्त नमी बनाए रखने हेतु आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। गेहूँ की फसल जो दुध भरने की अवस्था में है ध्यान दें कि खेत में नमी की कमी नही हो।
- गरमा फसल की बुआई से पूर्व मिट्टी में प्रयाप्त नमी की जाँच अवश्य कर लें। नमी के अभाव में बीजो का अंकुरण प्रभावित हो सकता है फलतः पौधों की संख्या में आयी कमी होने की वजह से उपज प्रभावित होगी।
- अगात बोयी गई भिण्डी की फसल में लीफ हॉपर (जैसिड) कीट की निगरानी करें। यह हरे रंग का कीट दिखने में सुक्ष्म होता है। भिंडी की खेत में घुसते ही यह कीट भिंडी के पौधे के पास से समूह में उड़ते हुए देखा जा सकते है। इसके शिशु व प्रौढ दोनो भिण्डी की पत्तियों के निचले हिस्से में रहते है और पत्तों का रस चुसते है जिसके फलस्वरूप पत्तियाँ किनारे से पिली होकर सिकुड़ती है तथा प्यालानुमा आकार बनाकर धीरे धीरे सुखने लगती है। फलन प्रभावित होती है। इस कीट का प्रकोप दिखाई देने पर इमिडाक्लोप्रिड ०१ मी०ली० प्रति ३ लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- शुष्क मौसम एवं तापमान में वृद्धि होना थ्रिप्स कीट के लिए अनुकुल वातावरण है। प्याज में थ्रिप्स कीट की निगरानी करें। यह प्याज को नुकसान पहुँचानेवाला मुख्य कीट है। यह आकार में अतिसुक्ष्म होता है तथा पत्तियों की सतह पर चिपक कर रस चुसते है जिससे पत्तियों का ऊपरी हिस्सा टेढ़ा–मेढा हो जाता है। पत्तियों पर दाग सा दिखाई देता है जो बाद में हल्के सफेद हो जाते है। जिससे उपज में काफी कमी आती है। थ्रीप्स की संख्या फसल में अधिक पाये जाने पर प्रोफेनोफॉस ५० ई०सी० दवा का १.० मि०ली० प्रति लीटर पानी या इम्डिाक्लोप्रिड दवा का १.० मी.ली. प्रति ३ लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें। प्याज की फसल में खर–पतवार निकालें। फसल में १० से १२ दिनों पर लगातार सिंचाई करें।
- जो कृषक बन्धु गरमा सब्जी लगाना चाहते है वें अबिलंब बुआई करें। लौकी की अर्का बहार, काशी कोमल, काशी गंगा, पूसा समर, प्रोलिफिक लाँग, पूसा मेद्यदूत, पूसा मंजरी, पूसा नवीन किस्मों की बुआई करें। तरबूज की अर्का मानिक, दुर्गापुर मधु, सुगरबेली, अर्का ज्योती (संकर) तथा खरबूज की अर्का जीत, अर्का राजहंस, पूसा शर्बती किस्में उत्तर बिहार के लिए अनुसंशित है। नेनुआ की पूसा चिकनी, स्वर्ण प्रभा, करैला की अर्का हरित, काशी उर्वशी, पूसा विशेष, कायमबटूर लॉग की बुआई करें। खेत की जुताई में २०–२५ टन गोबर की खाद, ३० किलोग्राम नेत्रजन, ५० किलोग्राम फॉसफोरस, ४० किलोग्राम पोटास प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें।
- बसंत ईख रोप के लिए उपयुक्त समय चल रहा है। मार्च के अन्तिम सप्ताह में यदि खेत में नमी की कमी होने पर रोप से पहले हल्की सिंचाई कर रोप करना चाहिए। ईख रोप हेतु दोमट मिट्टी तथा ऊँची जमीन का चुनाव कर गहरी जुताई करनी चाहिए। अनुशंसित प्रभेदो का चुनाव कर बीज मेड़ो की कवकनाशी (कार्बेडाजीम) १ ग्रा० प्रति लीटर के घोल में १५–२० मिनट उपचारित कर रोपनी करनी चाहिए। प्रभेदो के बीज रोग–व्याधि से मुक्त होना चाहिए एवं रोग मुक्त खेतों से लेना चाहिए और जहाँ तक संभंव हो ८–१० महीने के फसल को ही बीज के रुप में प्रयोग करना चाहिए।
- गरमा मूंग तथा उरद की बुआई करें। बुआई के पूर्व २० किलोग्राम नेत्रजन, ४५ किलोग्राम सल्फर, २० किलोग्राम पोटाश तथा २० किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। मूंग के लिए पूसा विशाल, सम्राट, एस०एम०एल०–६६८, एच०यू०एम०–१६ एवं सोना तथा उरद के लिए पंत उरद–१६, पंत उरद–३१, नवीन एवं उत्तरा किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के दो दिन पूर्व बीज को कार्बेन्डाजीम २.५ ग्राम प्रति किलो ग्राम की दर से शोधित करें। बुआई के ठीक पहले शोधित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करें। बीजदर छोटे दानों के प्रभेदों हेतु २०–२५ किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर तथा बड़े दानों के प्रभेदों हेतु ३०–३५ किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर रखें। बुआई की दूरी ३०X१० से०मी० रखें।

आज का अधिकतम तापमानः २८.५ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ०.५ डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः १३.२ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से १.६ डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी